द हैपी एण्ड हार्मोनियस फैमिली का लोकार्पण

"सहिष्णुता का प्राण है सापेक्षता"

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 4 अक्टूबर, 2009।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अभूतपूर्व कृति "द हैपी एण्ड हार्मोनियस फैमिली" का लोकार्पण समारोह रविवार को जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में हुआ। हार्पर एण्ड कोलिन्स पब्लिकेशन एवं जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में हुए इस कार्यक्रम में आचार्यश्री महाप्रज्ञ के द्वारा पुस्तक की प्रथम कृति को विमोचित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ समणीवृंद के मंगलसंगान से हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चौरड़िया ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रकाशन हार्पर एण्ड कोलिन्स ने इस कृति को प्रकाशित कर आचार्यवर के सुखद परिवार की समायोजना को विश्व तक पहुंचाया है। स्वाति बैद ने पारिवारिक संदर्भ में पुस्तक को स्वयं के लिए मार्ग दर्शक बताया। आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित इस पुस्तक की अनुवादिका मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने पुस्तक परिचय प्रस्तुत करते हुए इस पुस्तक की विषय वस्तु पर प्रकाश डाला। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने भारतीय समाज संरचना पर बढ़ते पाश्चात्य प्रभाव को उल्लेखित करते हुए आधुनिक संदर्भ में पुस्तक की उपयोगिता बताई। हार्पर एण्ड कोलिन्स के प्रधान सम्पादक श्रीकृष्ण चौपड़ा ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ को पुस्तक की कृति भेंट की तथा जैन विश्व भारती के ट्रस्ट श्री रणजीतसिंह कोठारी ने युवाचार्यश्री महाश्रमण को कृति भेंट की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कृति एवं कृतिकार दोनों को उद्धरित करते हुए पारिवारिक शांति के लिए इस पुस्तक को उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि पुस्तक में सौहार्दपूर्ण ढंग से पारिवारिक निर्वहन को सहजता के साथ प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान में संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकांकी परिवार बढ रहे हैं। उन्होंने कहा कि संयुक्त परिवार एकांकी परिवार की अपेक्षा में स्वस्थ प्रणाली है। लेकिन बढ़ते वैमनस्य भावों एवं सिमटने रिस्तों के कारण संयुक्त परिवार नहीं रह रहे हैं। पुस्तक में संयुक्त परिवार की पृष्ठभूमि पर बल देते हुए परिवार में सामंजस्य के फायदों से भी वाकिफ करवाया गया है।

इसी तरह पुस्तक के रचियता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि मैं स्वयं परिवार से बहुत ज्यादा नहीं जूड़ा हुआ हूं पर परिवार की समस्याओं से भली भांति समझता हूं। उन्होंने कहा कि जहां प्रेम, करूणा, त्याग, सहिष्णुता का संगम होता है वही परिवार बनता है। आचार्यवर ने कहा कि परस्पर विश्वास के बिना जीवन यात्रा नहीं चलती। सर्वाधिक विश्वास अपने परिवार पर ही किया जा सकता है। आश्वास और विश्वास इन दोनों संकल्पों के आधार पर संयुक्त परिवार की व्यवस्था हुई। जिसका सूरक्षा कवच है सहिष्णुता और सहिष्णुता का प्राण है सापेक्षता। वर्तमान युग में सहन करने की शक्ति कम हो रही है। इसलिए परस्परता या एक दूसरे की अपेक्षा की अनुभूति भी कम हो रही है। पुस्तक में इस बात पर बल दिया गया है कि किस प्रकार सहिष्णुता और सापेक्षता का भावात्मक विकास कर संयुक्त परिवार को दीर्घजीवी बनाया जा सकता है। पुस्तक में प्रशिक्षण और अभ्यास के कई सूत्र बताये गये हैं। जिनमें सामंजस्य, सहिष्णुता, विनय और वात्सल्य, कृतज्ञता, आश्वास तथा

नेतृत्व के प्रति आस्था का विकास सहज ही किया जा सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने पुस्तक के प्रकाशन सहयोगी बने श्रीकृष्ण चौपड़ा, साध्वी विश्रुतविभाजी एवं श्री सुरेन्द्र चौरड़िया का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर श्री चौपड़ा को जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री सुमेरमल सुराणा ने मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में झुंझुनु विश्वविद्यालय के कुलपति टिबरेवाला, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन वंदना कुण्डलिया ने किया, आभार व्यक्त श्री भीकमचंद पुगलिया ने किया।

दक्षिण भारत बनेगा अणुव्रत का केन्द्र

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं।

आचार्य तुलसी ने दक्षिण भारत की अणुव्रत यात्रा करके दक्षिण भारत को अणुव्रत मय बनाया था। समय के साथ दक्षिण में अणुव्रत का स्वर कुछ मंद हुआ है। अब अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष दक्षिण भारत के बने हैं। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री निर्मल रांका के कुशल नेतृत्व में दक्षिण भारत में अणुव्रत का स्वर बुलंद होगा और दक्षिण भारत एक बार पुनः अणुव्रत का केन्द्र बनेगा। यह विचार अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने रविवार को अणुव्रत के राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने खूब कार्य किया है और उनके सहयोग से नए अध्यक्ष और अधिक कार्य करते रहेंगे।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने अणुव्रत को जन–जन तक पहुंचाने के लिए अधिक प्रयास करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि महावीर द्वारा अणुव्रत गीत प्रस्तुति से हुआ। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश सोनी ने आभार व्यक्त किया। महामंत्री श्री मगन जैन ने प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए स्थानीय मंत्री डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी एवं स्थानीय समिति के सहयोग की सराहना की। श्री राजेन्द्र सेठिया ने भी अणुव्रत के कार्यों की प्रशंसा की। डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अगले वर्ष अणुव्रत विकास वर्ष घोषित करने के लिए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ से निवेदन करते हुए कहा कि इससे वर्षभर में पूरे जोर शोर से अणुव्रत की गूंज सम्पूर्ण भारत में एक साथ गुंजायमान हो सकती है। श्री निर्मल रांका ने भविष्य में सभी के सहयोग से अणुव्रत के स्वर तीव्र करने का संकल्प लिया। अणुव्रत न्यास के अध्यक्ष श्री धनराज बोथरा ने भी विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर श्रेष्ठ कार्य के लिए पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री विजयराज सुराणा ने किया।